रा0 म0 वि0 सोनखर, रामनगर, प0 चम्पारण से संबंधित केस स्टडी

केस स्टडी के प्रस्तुतकर्ताः— ओबैदुर रहमान, प्रधानाध्यापक, रा0 म0 वि0 सोनखर, रामनगर, प0 चम्पारण।

रामनगर, नगर परिषद से सटे उतर की ओर सोमेश्वर पर्वत जाने वाले मार्ग में अवस्थित रा0 म0 वि0 सोनखर में प्रधानाध्यापक के रूप में मेरा पदस्थापन 22.07.2017 को हुआ। योगदान लेने हेतु जब मै विद्यालय पहुॅचा तब विद्यालय की दशा एवं दिशा देखकर मुझे लगा कि इसमें काफी सुधार की आवश्यक्ता है। परन्तु मन में यह उल्लास हुआ कि इस विद्यालय में मुझे जमीनी स्तर से कार्य करने का अवसर मिलेगा तथा सबों के सहयोग से मैं इस विद्यालय को एक आदर्श विद्यालय का स्वरूप प्रदान कर सकूॅगा। मैने विद्यालय परिसर को देखा तो पाया कि यह विद्यालय चहारदीवरी विहिन है। माल मवेशी खुले तौर पर विचरण कर रहे है। तथा उन मवेशियों का मल मूत्र विद्यालय परिसर में यत्र तत्र पड़ा हुआ है। परिसर में झाड़—झाड़िया एवं घास उगे पड़े थे। मैने विद्यालय के चेतना सत्र में देखा कि कोई भी बच्चा विद्यालय के परिधान में नही है। तथा बच्चों की उपस्थिति भी संतोषजनक नही थी। विद्यालय संचालन/समय सारणी तथा पठन—पाठन आदि गतिविधि संतोषजनक नही थी। मध्यांतर के बाद बच्चों का विद्यालय में ठहराव नही हो पा रहा था। इन सारी विपरित परिस्थितियों को देखते हुए मैने संकल्प लिया कि विद्यालय परिसर एवं वर्ग विनियमन, बच्चों में अनुशासन तथा

विद्यालय अनुकूल बच्चों का व्यवहार, सभी बच्चें परिधान में तथा समयनिष्ठ हो इसके लिए मैं दृढ़ संकल्पित हो गया।

बदलाव हेतु मेरे द्वारा किये गये प्रयास

मैने सर्व प्रथम विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकाओं के साथ बैठक कर विद्यालय के पठन–पाठन एवं समय सारणी, विद्यालय परिसर की साफ–सफाई इत्यादि पर चर्चा कर उनसे सहयोग की अपेक्षा की। सबों ने सहयोग का आश्वासन दिया। चेतना सत्र में विद्यालय के बच्चों से संवाद कर उन्हे नैतिकता का बोध कराते हुए नियमित रूप से विद्यालयी परिधान में आने साथ ही विद्यालय की साफ–सफाई आदि के लिए प्रेरित किया गया। इसी क्रम में विद्यालय शिक्षा समिति एवं अभिभावकों की बैठक कर विद्यालय का सौदर्यीकरण शैक्षणिक व्यवस्था में बच्चों को नियमित एवं विद्यालीय परिधान में आने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही विद्यालय में बच्चों को जो गृह कार्य दिया जाता है उसके लिए अभिभावक भी बच्चों पर निगरानी रखें ताकि बच्चे गृह कार्य को पूर्ण कर सके, इसके लिए उन्हे प्रेरित किया गया।

तत्पश्चात् विद्यालय में उगे हुए घास एवं झाड़ियों को बच्चों के साथ मिलकर उसे साफ किया गया तदोपरांत अभिभावकों एवं विद्यालय शिक्षा समिति के सदस्यों के सहयोग से बॉस आदि की व्यवस्था कर विद्यालय का धेरा बंदी कर फुल आदि की बागवानी लगाई गई जिससे विद्यालय परिसर सुन्दर दिखने लगा। साथ ही माल मवेशी घुसकर विद्यालय परिसर को गंदा करते थे जो पूर्णतः बंद हो गया। रसोई घर के बगल में पोषण वाटिका बनाया गया जिसमें मौसमी हरी साग–सब्जियां भी लगाई गई। जिसका प्रयोग प्रधानमंत्री पोषण योजना में किया जाता है।

रसोई घर

पोषण वाटिका

विभाग द्वारा मुहैया कराई गई विद्यालय समग्र अनुदान राशि से विद्यालय का सौदर्यीकरण तथा शौचालय मरम्मती, वॉश बेसिंग इत्यादि का निर्माण कराया गया। सभी वर्ग कक्ष के सामने कूड़ेदान की व्यवस्था, मेडिकल कीट, वर्ग 1 एवं दो को छोड़कर सभी वर्ग में बेन्च एवं डेस्क की व्यवस्था, बच्चों को पीने के लिए स्वच्छ पेय जल की व्यवस्था तथा वर्ग 7 एवं 8 के बच्चों के लिए स्मार्ट क्लास की व्यवस्था है। विद्यालय परिसर एवं भवन की सुरक्षा हेतु काफी प्रयास के बाद विधान पाषर्द निधि एवं मनरेगा से चहारदीवारी निर्माण कार्य पूरा हुआ तथा गेट लगाया गया जिससे विद्यालय परिसर पूर्ण रूपेण सुरक्षित हो पाया।

पीने के लिए स्वच्छ जल की व्यवस्था एवं सुरक्षित परिसर

वर्तमान में विद्यालय का शैक्षणिक वातावरण सुदृढ़ हुआ है, बच्चें नियमित रूप से विद्यालयी परिधान में आते है तथा उनके खेलने कूदने की भी व्यवस्था की गई है साथी ही विभाग द्वारा वर्ग 1 से वर्ग 5 तक के छात्र/छात्राओं के लिए चहक किट एवं पुस्तकालय की भी व्यवस्था की गई जिससे उनका शैक्षणिक, शारीरिक एवं मानसिक विकास हो रहा है। विद्यालय शिक्षा समिति, अभिभावकों, बाल संसद मीना मंच आदि की नियमित बैठक कर उनका सुझाव आमंत्रित किया जाता है। जिससे विद्यालय विकास में काफी लाभ होता है। इसके फलस्वरूप विद्यालय का आकर्षण एवं व्यवस्था सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है।

बच्चो के लिए खेलने कूदने की व्यवस्था

अभिभावक संगोष्ठी

प्रयासोपरांत विद्यालय में हुए बदलाव के फलस्वरूप साकारात्मक परिणाम

आज यह विद्यालय प्रखण्ड रामनगर का एक आदर्श विद्यालय का स्वरूप प्रदान कर रहा है। जिसके फलस्वरूप अभिभावको एवं अन्य ग्रामिणों के लिए यह आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। इस विद्यालय में बच्चों के नामांकन के लिए होड़–सा लगा रहता है। बच्चों का साप्ताहिक एवं मासिक मूल्यांकन किया जाता है। इससे बच्चों में शैक्षिक स्पर्धा बनी रहती है। खेल कूद के सामान के साथ–साथ विद्यालय में झुले की भी व्यवस्था है जिससे बच्चें काफी आनंदित होते

है एंव नियमित विद्यालय आते है। साथ ही गतिविधि आधारित शिक्षण व्यवस्था भी बच्चों को काफी कुछ सिखने के लिए प्रोत्साहित करती है।

इस विद्यालय के कार्य करने के अनुभव से अनय विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों हेतु सुझाव

प्रतिकूल परिस्थिति में अनुकूल कार्य कैसे किया जाता है इसका अनुभव मुझे प्राप्त हुआ और हम चाहेंगे कि इस रामनगर प्रखण्ड के सभी प्रधानाध्यापक अन्तः मन से दृढ़ संकल्पित होकर कार्य करें तो परिस्थितियां चाहे जो भी हो उनको साकारात्मक एवं अनुकूल बनाया जा सकता है। इसके लिए सबों की सहभागिता भी सुनिश्चित करनी होगी (विद्यालय शिक्षा समिति/अभिभावक/छात्र एवं छात्रा/सभी शिक्षक) प्रसिद्ध रचनाकार सोहनलाल द्विवेदी जी ने सच ही कहा है किः–

''लहरों से डरकर नौका पार नही होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नही होती।''